IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के संदर्भ में प्रारंभिक चरण की हिंदी की पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन

Neelkanth Kumar

Assistant Professor Hindi

NCERT, NEW DELHI

सारांश -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं को शिक्षा का आधार मानते हुए यह स्पष्ट करती है कि बच्चों की संज्ञानात्मक विकास, साक्षरता, और सीखने की गति सबसे अधिक प्रभावी तब होती है जब शिक्षा उनकी मातृभाषा भाषा में दी जाए। विशेष रूप से प्रारंभिक चरण में भाषा शिक्षा को मजबूत करने पर नीति का विशेष जोर है। विद्यार्थियों में पठन, लेखन, वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों का आधार तैयार करने में पाठ्यपुस्तकें सहायक होती हैं। प्रस्तुत पुस्तक, बच्चों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, साझा करने व कल्पना जैसे अभ्यासों को विस्तार कर गहरा करने के अवसर देने वाली प्रतीत होती है। पाठों के अभ्यास में बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है। खासकर छोटे बच्चों के लिए जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। ऐसी गतिविधयाँ भी दी गई हैं जिसमें बच्चे हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ें सकते हैं। इस पुस्तक का यह एक अन्य सकारात्मक पक्ष है। प्रारंभिक चरण में भाषा शिक्षा केवल पढ़ना-लिखना नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति क्षमता, संवाद कौशल, कहानी सुनाना, चर्चा करना, रचनात्मक लेखन और भाषा के माध्यम से सोचने की क्षमता को विकसित करने का माध्यम है।

बीज शब्द-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, बहुभाषिकता, शब्द पहचान, संज्ञानात्मक विकास, भाषा शिक्षा, सीखने की गति, भारतीय भाषा

प्रारंभिक चरण की हिंदी की पाठ्यपुस्तक का समीक्षा वीणा - 3

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं को शिक्षा का आधार मानते हुए यह स्पष्ट करती है कि बच्चों की संज्ञानात्मक विकास, साक्षरता, और सीखने की गति सबसे अधिक प्रभावी तब होती है जब शिक्षा उनकी मातृभाषा भाषा में दी जाए। विशेष रूप से प्रिपरेटरी चरण में भाषा शिक्षा को मजबूत करने पर नीति का विशेष जोर है। विद्यार्थियों में पठन, लेखन, वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों का आधार तैयार करने में पाठ्यपुस्तकें सहायक होती हैं। प्रस्तुत पुस्तक, बच्चों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, साझा करने व कल्पना जैसे अभ्यासों को विस्तार कर गहरा करने के अवसर देने वाली प्रतीत होती है। पाठों के अभ्यास में बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है। खासकर छोटे बच्चों के लिए जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। ऐसी गतिविधयाँ भी दी गई हैं जिसमें बच्चे हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ें सकते हैं। इस पुस्तक का यह एक अन्य सकारात्मक पक्ष है। प्रारंभिक चरण में भाषा शिक्षा केवल पढ़ना-लिखना नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति क्षमता, संवाद कौशल, कहानी सुनाना, चर्चा करना, रचनात्मक लेखन और भाषा के माध्यम से सोचने की क्षमता को विकसित करने का माध्यम है।

1. पुस्तक का विवरण

- पाठ्यपुस्तक का शीर्षक: वीणा (कक्षा 4 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक)
- कक्षा/श्रेणी: कक्षा 4
- विषय: हिंदी
- संस्करण/ प्रकाशन वर्ष: प्रथम, मार्च 2025
- आईएसबीएन (यदि उपलब्ध है): 978-93-5729-337-2

2. उद्देश्य एवं प्रासंगिकता

- **पाठ्यपुस्तक पुस्तक का निर्दिष्ट लक्ष्य क्या है?**

  विद्यार्थियों में पठन, लेखन, वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों का आधार तैयार करने में पाठ्यपुस्तकें सहायक होती हैं। कक्षा 4 के लिए *वीणा* पुस्तक इन्हीं उद्देश्यों हेतु विकसित की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अक्षरशः अनुपालन करते हुए, यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है।

- **यह पुस्तक एनईपी *2020* एवं एनसीएफ *2023* के उद्देश्यों को कैसे पूर्ण करती है? (2023/आधारभूत स्तर, माध्यमिक स्तर आदि)?**

  पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, एकांकी, पहेली आदि से बच्चों का रुचिपूर्ण तरीके से परिचय करवाया गया है। अभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे बच्चों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होने की संभावना के साथ हैं। पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती हुई दिखाई देती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से बच्चों में समावेशी दृष्टिकोण लाने

और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है। विभिन्न भाषायी कौशलों जैसे समझ के साथ बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

यह भी महत्वपूर्ण बिंदु है कि प्रारंभिक चरण (प्रिपेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा *2023* (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ एवं सीखने के प्रतिफल निर्धारित किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित लक्ष्य, दक्षताएँ एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है। साथ ही यह पुस्तक पंचकोशीय अवधारणा को भी लेकर चलती है।

- **क्या यह पुस्तक विद्यार्थियों की आयु के स्तर का ध्यान रखने वाली, प्रासंगिक संदर्भ को प्रकट करने वाली एवं विद्यार्थी-केंद्रित है?**

हाँ, यह पुस्तक इन सभी बिंदुओं का ध्यान रखती है। ध्यान हो कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा *2023* (विद्यालयी शिक्षा) में जो पाठ्यचर्या के लक्ष्य, आयु को ध्यान में रखकर ही निर्धारित किए गए हैं। जो निम्न हैं-

पाठ्यचर्या लक्ष्य-1: विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।
पाठ्यचर्या लक्ष्य-2: परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।
पाठ्यचर्या लक्ष्य-3: अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।
पाठ्यचर्या लक्ष्य-4: विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करते हैं।
पाठ्यचर्या लक्ष्य-5: पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं।

संदर्भों की प्रासंगिकता को देखें तो पुस्तक में संस्कृति वैविध्य और वैज्ञानिक प्रगति, मौखिक भाषा का विकास और लिखना, कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता, परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन, बहुभाषिकता और कक्षा-शिक्षण जैसे संदर्भ स्पष्ट हैं जो विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हैं। पुस्तक में संयोजित पाठ एवं उनके अभ्यास विद्यार्थी-केंद्रित हैं। इसका उदाहरण निम्न है—

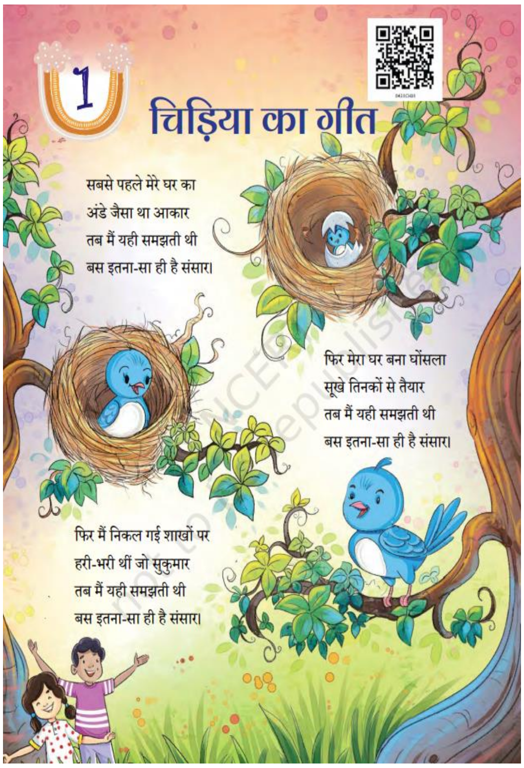
1
चिड़िया का गीत
सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार
तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।
फिर मेरा घर बना घोंसला
सूखे तिनकों से तैयार
तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।
फिर मैं निकल गई शाखों पर
हरी-भरी थीं जो सुकुमार
तब मैं यही समझती थी
बस इतना-सा ही है संसार।

3. नीचे पशु-पक्षियों से संबंधित कुछ पहेलियाँ दी गई हैं। पहेलियों का उपयुक्त चित्रों से मिलान कीजिए—
पंखों में नाखून हूँ रखता,
रात अँधेरे में ही उड़ता।
दिन में न मैं भोजन पाऊँ,
उल्टा होकर के सो जाऊँ।
पत्तों जैसा उसका रंग,
कुतर-कुतर खाने का ढंग।
घरों में भी पाला जाता,
नाम बताओ उसका ज्ञाता।
नीड़ नहीं वह कभी बनाती,
बागों की रानी कहलाती।
काला रंग है उसका भैया,
सबके दिल को खूब लुभाती।
दिनभर सूरत नहीं दिखाता,
रात कुलाँचे भरता।
और समझता ऐसा जैसे,
सूरज उससे डरता।
14 वीणा | कक्षा 4

हमारे देश के नृत्य
आइए, अपने देश के विभिन्न राज्यों के शास्त्रीय और लोकनृत्यों की पहचान करते हैं—
भरतनाट्यम
कथक
कथकली
मोहिनीअट्टम
ओडिसी
लावणी
कुचिपुड़ी
98 वीणा | कक्षा 4

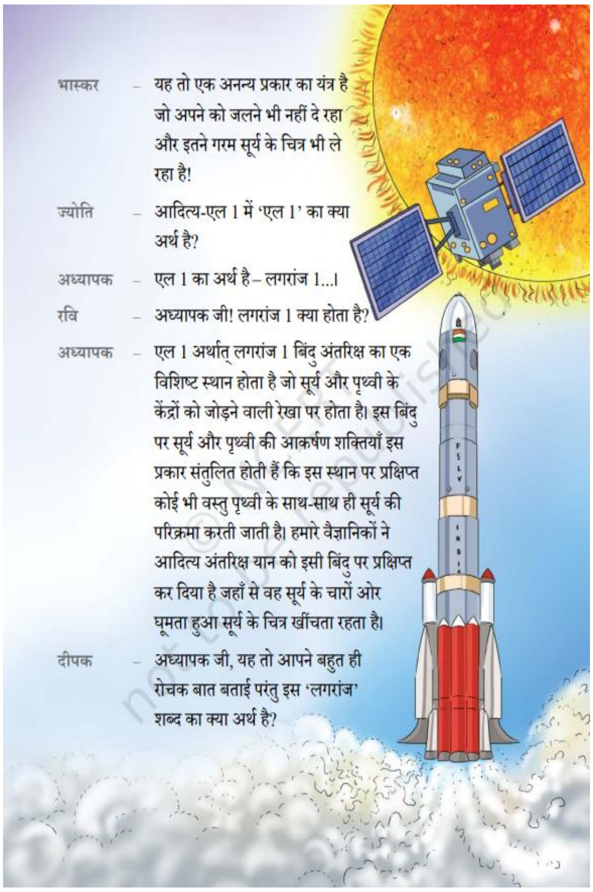
भास्कर – यह तो एक अनन्य प्रकार का यंत्र है जो अपने को जलने भी नहीं दे रहा और इतने गरम सूर्य के चित्र भी ले रहा है!
ज्योति – आदित्य-एल 1 में 'एल 1' का क्या अर्थ है?
अध्यापक – एल 1 का अर्थ है– लगरांज 1...।
रवि – अध्यापक जी! लगरांज 1 क्या होता है?
अध्यापक – एल 1 अर्थात् लगरांज 1 बिंदु अंतरिक्ष का एक विशिष्ट स्थान होता है जो सूर्य और पृथ्वी के केंद्रों को जोड़ने वाली रेखा पर होता है। इस बिंदु पर सूर्य और पृथ्वी की आकर्षण शक्तियाँ इस प्रकार संतुलित होती हैं कि इस स्थान पर प्रक्षिप्त कोई भी वस्तु पृथ्वी के साथ-साथ ही सूर्य की परिक्रमा करती जाती है। हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य अंतरिक्ष यान को इसी बिंदु पर प्रक्षिप्त कर दिया है जहाँ से वह सूर्य के चारों ओर घूमता हुआ सूर्य के चित्र खींचता रहता है।
दीपक – अध्यापक जी, यह तो आपने बहुत ही रोचक बात बताई परंतु इस 'लगरांज' शब्द का क्या अर्थ है?

3. **सामग्री समीक्षा**

- **सूचना की सटीकता, प्रामाणिकता और प्रासंगिकता**

इस पुस्तक में दी गई जानकारी की सटीकता, प्रामाणिकता एवं प्रासंगिकता का सावधानीपूर्वक ध्यान रखा गया है। उदाहरण के लिए 'भाँति-भाँति की पत्तियाँ' पाठ देखा जा सकता है। इस पाठ में विभिन्न पत्तियों की आकृतियों के बारे में न सिर्फ बताया गया है बल्कि उनके चित्र भी दिए गए हैं। इससे बच्चों को उन्हें पहचानने में सरलता होगी साथ ही वे अपने द्वारा अर्जित अनुभव आधारित ज्ञान का भी इसमें प्रयोग करेंगे। इसमें वे अपने परिवारजन की भी सहायता ले सकते हैं। बिना प्रकृति के मनुष्य जीवन की कल्पना नामुमकिन है। प्रकृति को निहारना, उसके साथ समय व्यतीत करना, उसके प्रति कौतूहल एवं रुचि प्रदर्शित करना बच्चों के संसार का अभिन्न हिस्सा होता है। इस पाठ की प्रासंगिकता इसी से उद्घाटित होती है।

- **पाठ्यक्रम एवं सीखने के प्रतिफलों की अवधारणा का समावेशन(कवरेज).**

प्रस्तुत पुस्तक में निर्धारित पाठ्यक्रम के सभी तत्वों का समावेशन का सफल प्रयास किया गया है। इसके साथ ही सीखने के प्रतिफलों को विभिन्न अभ्यासों द्वारा प्रस्तुत एवं संयोजित किया गया है। इसके उदाहरण पुस्तक के प्रत्येक पाठ में उपस्थित हैं। पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ एवं सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण हैं—

पाठ्यपुस्तक में समाहित मुख्य विषयवस्तु पाठ्यक्रम के अनुसार

- प्रामाणिक पाठ्यसामग्री
- पाठ एवं अभ्यास कार्यों में मुख्य भाषायी कौशलों का विकास
- संदर्भ सहित व्याकरण (उदाहरण के लिए पृष्ठ सं. 28 देखें)
- विभिन्न विधाओं का प्रतिनिधित्व
- स्तर के अनुसार सरल भाषा सामग्री
- बहुभाषिकता
- अंतः अनुशासनात्मक दृष्टिकोण
- चित्रकारी एवं कला समेकन

- खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र
- कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता
- तार्किक चिंतन
- चित्रांकन: सजीव एवं आकर्षक चित्रों का संयोजन
- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता
- आपदा प्रबंधन (प्राथमिक चिकित्सा)
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का प्रतिनिधित्व
- जेंडर संवेदनशीलता

डॉ. नीलकंठ कुमार

पुस्तक के आरंभ में 'ऐसा वर दो' प्रार्थना है। यह कविता संपूर्ण प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रार्थना कर अनुराग को गहरा करने का अभ्यास स्वयं में समाहित करने की प्रेरणा बच्चों को देने वाली कविता है। पुस्तक का आरंभ 'चिड़िया का गीत' कविता और 'बगीचे का घोंघा' नामक कहानी से किया गया है। 'चिड़िया का गीत' कविता अपनी मधुरता और सरल भाषा द्वारा घर और बाहर के संसार के चित्र को अंकित करती है तो वहीं 'बगीचे का घोंघा' कहानी संसार को कौतूहल की दृष्टि से देखने की उत्प्रेरणा देती है। दोनों पाठ, चिड़िया और घोंघे के माध्यम से बच्चों को संसार की विशालता का बोध रोचक तरीके से करवाने में सक्षम हैं। 'नीम' कविता में यह दर्शाया गया है कि नीम जैसे वृक्ष भारतीय संस्कृति व परंपरा के अभिन्न अंग हैं। इस कविता के अभ्यासों में अन्य वृक्षों के अद्भुत प्रकारों का परिचय भी है। 'भाँति-भाँति की पत्तियाँ' एक संक्षिप्त पाठ है जो विश्व की अनोखी पत्तियों से विद्यार्थियों का परिचय करवा रहा है।

‘गोलगप्पा’ ‘मिठाइयों का सम्मेलन’, ‘आहार हमारा’ पाठ भारतीय खान-पान संबंधी व्यवहारों, विशेष व्यंजनों और पोषण से संबंधित हैं। बाजार में मिनटों में बनकर तैयार हो जाने खाद्य पदार्थों की भीड़ में स्वास्थ्य पीछे छूट जाता है। इसलिए स्वास्थ्य और स्वस्थ भोजन के बीच का संबंध महत्वपूर्ण है। ‘आहार हमारा’ कविता सरलता से इस विषय को प्रस्तुत करती है। बच्चों को मिठाइयों से प्रेम होता है। ‘मिठाइयों का सम्मेलन’ विभिन्न प्रकार की भारत की मिठाई और संस्कृति का बोध करवाने वाला संवाद है तथा यह भी आग्रह करता है कि खान-पान में अति नहीं बरतनी चाहिए।

कहाँ क्या है?

आमुख iii
पाठ्यपुस्तक के विषय में v
ऐसा वर दो 1
1. चिड़िया का गीत 2
मति की उड़ान 16
2. बगीचे का घोंघा 17
3. नीम 27
भाँति-भाँति की पत्तियाँ 38

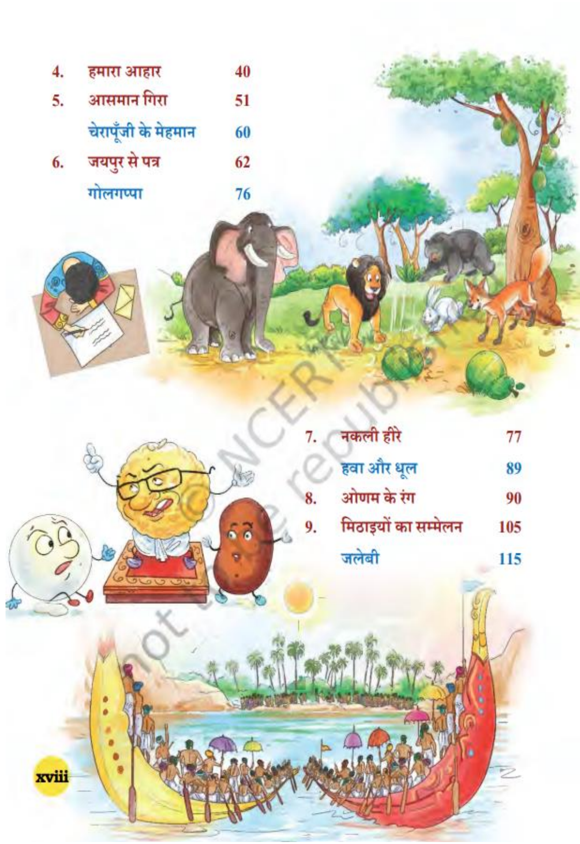

4. हमारा आहार 40
5. आसमान गिरा 51
चेरापूँजी के मेहमान 60
6. जयपुर से पत्र 62
गोलगप्पा 76
7. नकली हीरे 77
हवा और धूल 89
8. ओणम के रंग 90
9. मिठाइयों का सम्मेलन 105
जलेबी 115

xviii

भोगौलिकता, विविधतापूर्ण संस्कृति और वैज्ञानिक प्रगति आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। अतः पुस्तक में इस विशेषता को उद्‌घाटित करने वाले विभिन्न साहित्यिक विधा वाले पाठ लिए गए हैं। ‘ओणम के रंग’ (निबंध), ‘जयपुर से पत्र’ (पत्र) ‘चेरापूँजी के मेहमान’ (लघुकथा) और ‘हमारा आदित्य’ (विज्ञानकथा) पाठ बच्चों में भारतीय भौगोलिक परिवेश को जानने और भारतीयता को स्वयं में आत्मसात करने में सहायक हैं। पुस्तक में सूर्य-नमस्कार से अपनी दिनचर्या प्रारंभ करने वाला देश अब उससे मिलने के लिए अंतरिक्ष में जा पहुँचा है, की भावना स्पष्टतः प्रकट हो रही है।

बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी दिनचर्या में आनंद और हास्य नैसर्गिकता के साथ उपस्थित होता है। ‘आसमान गिरा’ (कहानी), ‘सुन, इमली के दाने सुन!’ और ‘कैमरा’ जैसी कविताएँ बच्चों को हँसाने-गुदगुदाने का माध्यम बनती हुई दिखाई दे रही हैं। इसके अतिरिक्त ‘नकली हीरे’ (चित्रकथा) पाठ विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों के भाव को प्रस्तुत कर रहा है।

10. कैमरा 116
सुन, इमली के दाने सुन! 125
ठहाके 126
11. कविता का कमाल 127
12. शतरंज में मात 139
13. हमारा आदित्य 154
हम सब सुमन एक उपवन के 173
xix

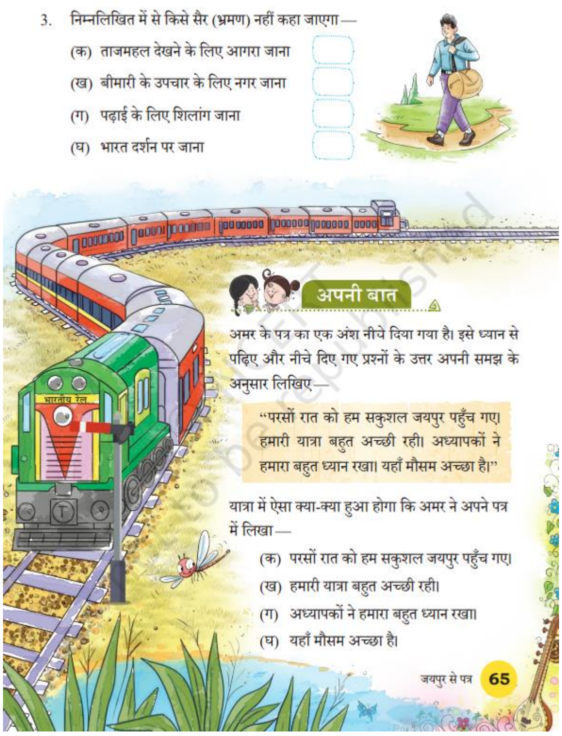

3. निम्नलिखित में से किसे सैर (भ्रमण) नहीं कहा जाएगा—
(क) ताजमहल देखने के लिए आगरा जाना
(ख) बीमारी के उपचार के लिए नगर जाना
(ग) पढ़ाई के लिए शिलांग जाना
(घ) भारत दर्शन पर जाना

अपनी बात

अमर के पत्र का एक अंश नीचे दिया गया है। इसे ध्यान से पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी समझ के अनुसार लिखिए—

"परसों रात को हम सकुशल जयपुर पहुँच गए। हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही। अध्यापकों ने हमारा बहुत ध्यान रखा। यहाँ मौसम अच्छा है।"

यात्रा में ऐसा क्या-क्या हुआ होगा कि अमर ने अपने पत्र में लिखा—
(क) परसों रात को हम सकुशल जयपुर पहुँच गए।
(ख) हमारी यात्रा बहुत अच्छी रही।
(ग) अध्यापकों ने हमारा बहुत ध्यान रखा।
(घ) यहाँ मौसम अच्छा है।

जयपुर से पत्र 65

भारतीय ज्ञान परंपरा में विकसित कथा शैली के उदाहरण पुस्तक में उपस्थित हैं। 'कविता का कमाल' (लोककथा) और 'शतरंज में मात' (एकांकी) पाठ इस ज्ञान परंपरा और कथा शैली से परिचय तो करवा रहे हैं, साथ ही कहने-सुनने की अलग-अलग विधाओं के अंतर को भी स्पष्ट करते हुए भाषा-प्रयोगों के उत्कृष्ट रूपों को बच्चों के समक्ष रख रहे हैं। विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर मुंशी प्रेमचंद के लिखे साहित्य की झलक 'मेरा बचपन' (संस्मरण) पाठ द्वारा मिल रही है। लेखक के बचपन की स्मृतियाँ और खेलों के प्रति आकर्षण, बच्चों को खेल और खेल-भावना जैसे अभ्यास और मूल्यों के बारे में बता रही हैं। साथ ही 'हवा और धूल' जैसी मनोरम और आनंदमयी कविता हवा और धूल के मध्य चलने वाले खेल का आरेख खींच रही है।

- **भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्यों एवं वास्तविक-जीवन आधारित अनुप्रयोग.**

पुस्तक में भारतीय ज्ञान परंपरा में विकसित कथा शैली के अनुपम उदाहरण उपस्थित हैं। 'कविता का कमाल' (लोककथा) और 'शतरंज में मात' (एकांकी) पाठ इस ज्ञान परंपरा और कथा शैली से परिचय करवा रहे हैं, साथ ही कहने-सुनने की अलग-अलग विधाओं के अंतर को भी स्पष्ट करते हुए भाषा-प्रयोगों के उत्कृष्ट रूपों को बच्चों के समक्ष रखेंगे। विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर मुंशी प्रेमचंद के लिखे साहित्य की झलक 'मेरा बचपन' (संस्मरण) पाठ द्वारा मिलेगी। लेखक के बचपन की स्मृतियाँ और खेलों के प्रति आकर्षण, बच्चों को खेल और खेल-भावना जैसे अभ्यास और मूल्यों के बारे में बता रहा है। 'नकली हीरे' (चित्रकथा) पाठ विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों के भाव को प्रस्तुत कर रहा है। अनुभव के आधार पर पाठ्यपुस्तक में ऐसे अभ्यास उपस्थित हैं जो बच्चों को स्व-जीवन से अपनी बात रखने का अवसर देने वाले हैं। उदाहरण के लिए *'मिठाइयों का सम्मेलन'* पाठ में यह प्रश्न दिया गया है, "स्वस्थ रहने के लिए आप क्या-क्या करते हैं? पाँच वाक्य लिखिए।"

4. **शिक्षा-विज्ञान संबंधी विशेषताएँ**

- **पाठ्यपुस्तक अनुभव-आधारित अधिगम, खोजबीन (जाँच), खेल एवं गतिविधि आधारित दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से कैसे प्रोत्साहित करती है?**

पुस्तक में सम्मिलित पाठों के संकलन में इन सभी बिंदुओं का ध्यान रखा गया है साथ ही अभ्यासों में भी इनसे जुड़ी गतिविधियों को प्रमुखता से उभारा गया है। पुस्तक में बातचीत के प्रश्न हों, या फिर अनुमान एवं कल्पना आधारित गतिविधियाँ, सभी में ऐसे शैली को

अपनाया गया है जिससे विद्यार्थी खेल-खेल में सरलता से सीखें और जानें। खेल एवं अन्य गतिविधि आधारित प्रश्न भी पाठों में दिए गए उदाहरणों से इन बिंदुओं को समझा जा सकता है –

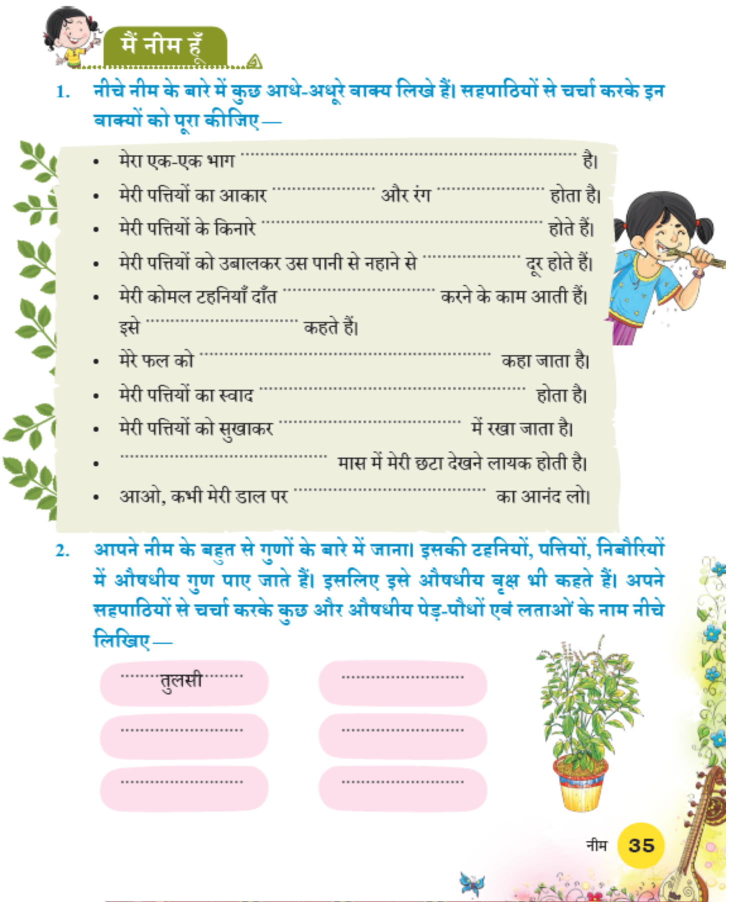

मैं नीम हूँ

1. नीचे नीम के बारे में कुछ आधे-अधूरे वाक्य लिखे हैं। सहपाठियों से चर्चा करके इन वाक्यों को पूरा कीजिए—

- मेरा एक-एक भाग …………………… है।
- मेरी पत्तियों का आकार …………… और रंग …………… होता है।
- मेरी पत्तियों के किनारे …………………… होते हैं।
- मेरी पत्तियों को उबालकर उस पानी से नहाने से …………… दूर होते हैं।
- मेरी कोमल टहनियाँ दाँत …………… करने के काम आती हैं। इसे …………… कहते हैं।
- मेरे फल को …………………… कहा जाता है।
- मेरी पत्तियों का स्वाद …………………… होता है।
- मेरी पत्तियों को सुखाकर …………… में रखा जाता है।
- …………… मास में मेरी छटा देखने लायक होती है।
- आओ, कभी मेरी डाल पर …………… का आनंद लो।

2. आपने नीम के बहुत से गुणों के बारे में जाना। इसकी टहनियों, पत्तियों, निबौरियों में औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसलिए इसे औषधीय वृक्ष भी कहते हैं। अपने सहपाठियों से चर्चा करके कुछ और औषधीय पेड़-पौधों एवं लताओं के नाम नीचे लिखिए—

……तुलसी…… ……………
…………… ……………
…………… ……………

नीम 35

3. नीचे दी गई पत्तियों को पहचानिए और इनके नाम तथा विशेषताएँ अपने अध्यापकों तथा अभिभावकों की सहायता से लिखिए—

पत्तियाँ	नाम	विशेषता
	आम	बंदनवार बनाने में प्रयोग की जाती हैं।
	……………	……………
	……………	……………
	……………	……………
	……………	……………

4. आपके परिवेश में जो भी पत्ते दिखते हैं, उनका संग्रहण कीजिए। पत्तों को किसी मोटे कागज पर चिपकाइए। उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए उनके बारे में दो-दो वाक्य लिखिए।

34 वीणा | कक्षा 4

12 शतरंज में मात

तेनाली रामकृष्ण (तेनालीरामन) विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय के दरबार में विदूषक एवं राज परामर्शदाता के रूप में जाने जाते थे। वे अपनी कुशाग्र बुद्धि और हास्य भरे वृत्तांतों के लिए प्रसिद्ध हैं।

पहला दृश्य

(राजा का दरबार। दरबारी अपने-अपने आसन पर बैठे हैं। राजा और तेनालीरामन के आसन अभी खाली हैं।)

पहला दरबारी – देखा! अब तक नहीं आए तेनालीरामन।
दूसरा दरबारी – भला क्यों आएँगे? जब स्वयं महाराज उनकी मुट्ठी में हैं तो वे हम जैसों को क्यों पूछेंगे?
तीसरा दरबारी – महाराज ने भी बहुत सिर चढ़ाया है तेनाली को!
चौथा दरबारी – (*राजा की नकल करता है*) हाँ तेनाली! वाह तेनाली! क्या पते की बात कही तेनाली ने... तेनाली, तेनाली, तेनाली! कान पक गए हैं प्रशंसा सुनते-सुनते।
पहला दरबारी – महाराज के सिर से तेनाली का भूत उतारना होगा।
दूसरा दरबारी – कितनी बार प्रयत्न किया। तेनाली की चतुराई के आगे एक नहीं चली।

11 कविता का कमाल

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी माँ के साथ गाँव में रहता था। माँ-बेटा बहुत गरीब थे। उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल-कूद में ही समय बिता देता था।

परेशान होकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, "अब मैं तुझे बिठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।"

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि कैसे पैसे कमाए? अचानक उसे ढिंढोरा पीटने की आवाज सुनाई दी।

"सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि-सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फियाँ पुरस्कार में मिलेंगी।" मदन चौकन्ना हो गया। सौ अशर्फियाँ, यह तो बना-बनाया अवसर है। वह सीधे राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा

- **क्या ये गतिविधियाँ तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोग-भावना एवं समस्या-समाधान को प्रोत्साहित करती हैं?**

  हाँ, ये गतिविधियाँ तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोग-भावना एवं समस्या-समाधान को प्रोत्साहित करती है। इसके उदाहरण निम्न हैं-

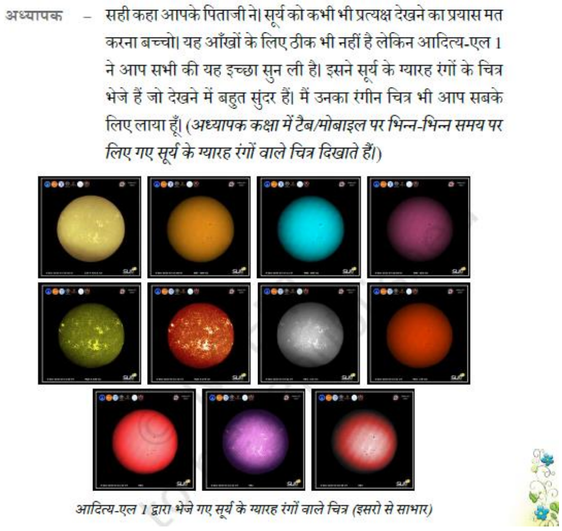

अध्यापक – सही कहा आपके पिताजी ने। सूर्य को कभी भी प्रत्यक्ष देखने का प्रयास मत करना बच्चो। यह आँखों के लिए ठीक भी नहीं है लेकिन आदित्य-एल 1 ने आप सभी की यह इच्छा सुन ली है। इसने सूर्य के ग्यारह रंगों के चित्र भेजे हैं जो देखने में बहुत सुंदर हैं। मैं उनका रंगीन चित्र भी आप सबके लिए लाया हूँ। (*अध्यापक कक्षा में टैब/मोबाइल पर भिन्न-भिन्न समय पर लिए गए सूर्य के ग्यारह रंगों वाले चित्र दिखाते हैं।*)

आदित्य-एल 1 द्वारा भेजे गए सूर्य के ग्यारह रंगों वाले चित्र (इसरो से साभार)

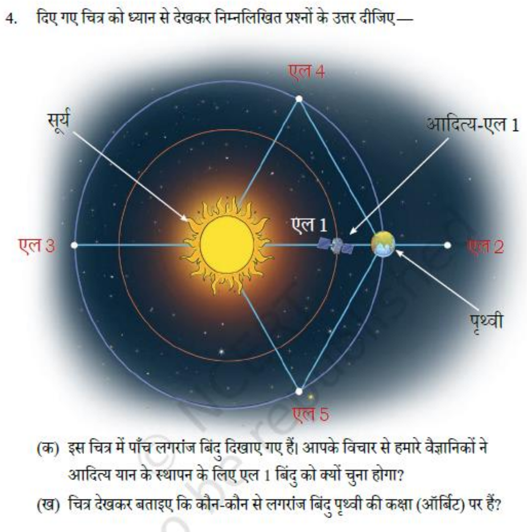

4. दिए गए चित्र को ध्यान से देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) इस चित्र में पाँच लगरांज बिंदु दिखाए गए हैं। आपके विचार से हमारे वैज्ञानिकों ने आदित्य यान के स्थापन के लिए एल 1 बिंदु को क्यों चुना होगा?

(ख) चित्र देखकर बताइए कि कौन-कौन से लगरांज बिंदु पृथ्वी की कक्षा (ऑर्बिट) पर हैं?

आपकी कविता

रजनी, मदन की कविता को गाते हुए विद्यालय जा रही थी। उसे बहुत आनंद आ रहा था। चलते-चलते अचानक उसे एक पेड़ पर कुछ बंदर दिखाई दिए। वे एक डाल से दूसरी डाल पर कूद रहे थे। जब वह थोड़ा आगे बढ़ी तो उसे एक सियार दिखाई दिया। सियार 'हुआँ-हुआँ' कर रहा था। अब सियार को आधार बनाकर आप कविता को पूरा करने में रजनी की सहायता कीजिए।

डाल-डाल क्यों कूद रहा?
खों-खों-खों क्यों बोल रहा?
बंदर जी, भाई बंदर जी!
....
....
....

पता लगाइए

1. जंतर-मंतर क्या है? भारत में यह जयपुर के अतिरिक्त और कहाँ-कहाँ स्थित है?
2. आपके राज्य में कौन-कौन से दर्शनीय स्थल हैं? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए।

कुछ कीजिए

1. अपने शिक्षक या किसी बड़े सदस्य के साथ डाकघर जाइए। वहाँ क्या-क्या काम किए जाते हैं, इसकी जानकारी एकत्रित कीजिए।
2. सभी विद्यार्थी चार-चार के समूह में भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों के चित्रों का संग्रह कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

जयपुर से पत्र 73

- **अवधारणात्मक स्पष्टता एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग में संतुलन.**

  पुस्तक में इन बिंदुओं का भी ध्यान रखा गया है और प्रस्तुतीकरण विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार है। इसका उदाहरण ऊपर दिए गए पुस्तक के चित्रों में देखा जा सकता है।

5. **समावेशन एवं प्रतिनिधित्व**

- **जेंडर संवेदनशीलता, सांस्कृतिक विविधता एवं समावेशन.**

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि बच्चे इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली गतिविधियाँ दी गई हैं। पाठ्यपुस्तक में लैंगिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। उदाहरण के लिए पुस्तक में 'मति की उड़ान' पाठ देखा जा सकता है जो पहली भारतीय महिला पायलट की चर्चा करता है। इसके अतिरिक्त भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से समेकन भी किया गया है।

- **हाशिए के समुदायों, क्षेत्रीय विविधता एवं बहु-आयामी दृष्टिकोण.**

पुस्तक में इन सभी बिंदुओं का ध्यान रखा गया है और उन्हें सरल एवं आकर्षक चित्रों से संविधान की मूल-भावना के अनुसार रखा गया है, उदाहरण के लिए—

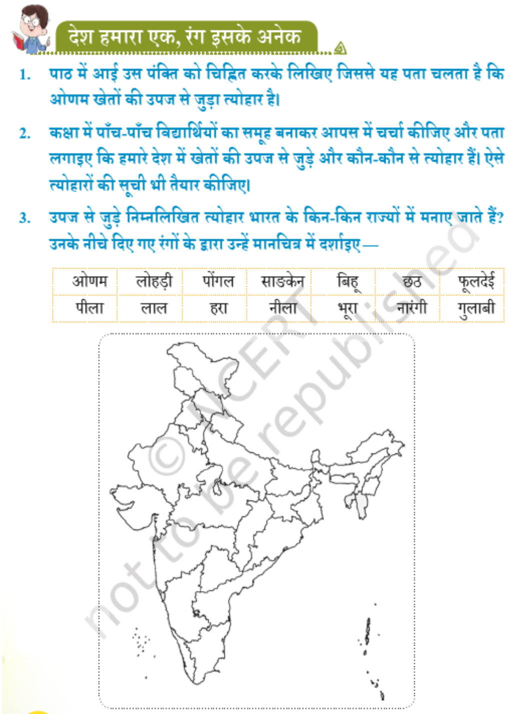

देश हमारा एक, रंग इसके अनेक

1. पाठ में आई उस पंक्ति को चिह्नित करके लिखिए जिससे यह पता चलता है कि ओणम खेतों की उपज से जुड़ा त्योहार है।
2. कक्षा में पाँच-पाँच विद्यार्थियों का समूह बनाकर आपस में चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि हमारे देश में खेतों की उपज से जुड़े और कौन-कौन से त्योहार हैं। ऐसे त्योहारों की सूची भी तैयार कीजिए।
3. उपज से जुड़े निम्नलिखित त्योहार भारत के किन-किन राज्यों में मनाए जाते हैं? उनके नीचे दिए गए रंगों के द्वारा उन्हें मानचित्र में दर्शाइए—

ओणम	लोहड़ी	पोंगल	साङकेन	बिहू	छठ	फूलदेई
पीला	लाल	हरा	नीला	भूरा	नारंगी	गुलाबी

- **भाषा का स्तर- विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए बोधगम्यता.**

प्रस्तुत पुस्तक, बच्चों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, साझा करने व कल्पना जैसे अभ्यासों को विस्तार कर गहरा करने के अवसर देने वाली प्रतीत होती है। पाठों के अभ्यास में बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है। खासकर छोटे बच्चों के लिए जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। ऐसी गतिविधयाँ भी दी गई हैं जिसमें बच्चे हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ें सकते हैं। इस पुस्तक का यह एक अन्य सकारात्मक पक्ष है।

6. **डिजाईन एवं प्रस्तुतीकरण.**

- **लेआउट, चित्र, आरेख, मानचित्र एवं फोटोग्राफ्स- क्या उम्र एवं रुचि अनुसार हैं?**
- **गतिविधियों की गुणवत्ता, अभ्यास एवं उदाहरण.**
- **टेक्स्ट, चित्रों एवं गतिविधियों के मध्य संतुलन.**

प्रस्तुत पुस्तक में इन सभी बिंदुओं का ध्यान रखा गया है। लेआउट, आरेख, चित्रों, मानचित्र, रंग-संयोजन एवं टेक्स्ट का संतुलन प्रत्येक पाठ में दिखाई दे रहा है। उपर्युक्त उदाहरण देखें जा सकते हैं।

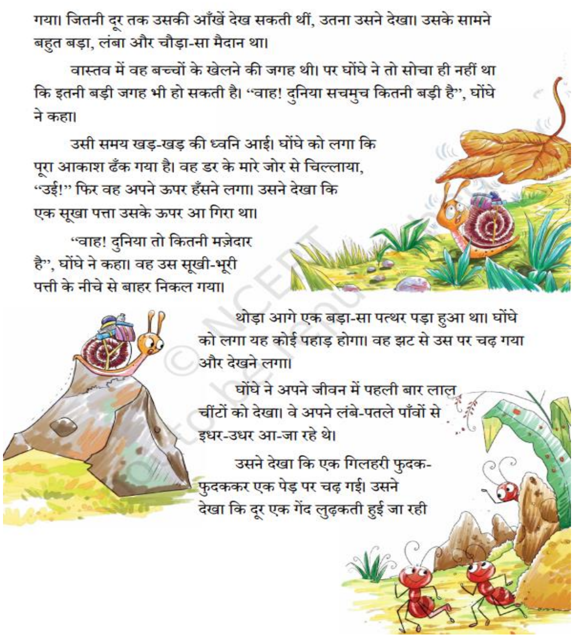
गया। जितनी दूर तक उसकी आँखें देख सकती थीं, उतना उसने देखा। उसके सामने बहुत बड़ा, लंबा और चौड़ा-सा मैदान था।

वास्तव में वह बच्चों के खेलने की जगह थी। पर घोंघे ने तो सोचा ही नहीं था कि इतनी बड़ी जगह भी हो सकती है। "वाह! दुनिया सचमुच कितनी बड़ी है", घोंघे ने कहा।

उसी समय खड़-खड़ की ध्वनि आई। घोंघे को लगा कि पूरा आकाश ढँक गया है। वह डर के मारे जोर से चिल्लाया, "उई!" फिर वह अपने ऊपर हँसने लगा। उसने देखा कि एक सूखा पत्ता उसके ऊपर आ गिरा था।

"वाह! दुनिया तो कितनी मज़ेदार है", घोंघे ने कहा। वह उस सूखी-भूरी पत्ती के नीचे से बाहर निकल गया।

थोड़ा आगे एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा हुआ था। घोंघे को लगा यह कोई पहाड़ होगा। वह झट से उस पर चढ़ गया और देखने लगा।

घोंघे ने अपने जीवन में पहली बार लाल चींटों को देखा। वे अपने लंबे-पतले पाँवों से इधर-उधर आ-जा रहे थे।

उसने देखा कि एक गिलहरी फुदक-फुदककर एक पेड़ पर चढ़ गई। उसने देखा कि दूर एक गेंद लुढ़कती हुई जा रही

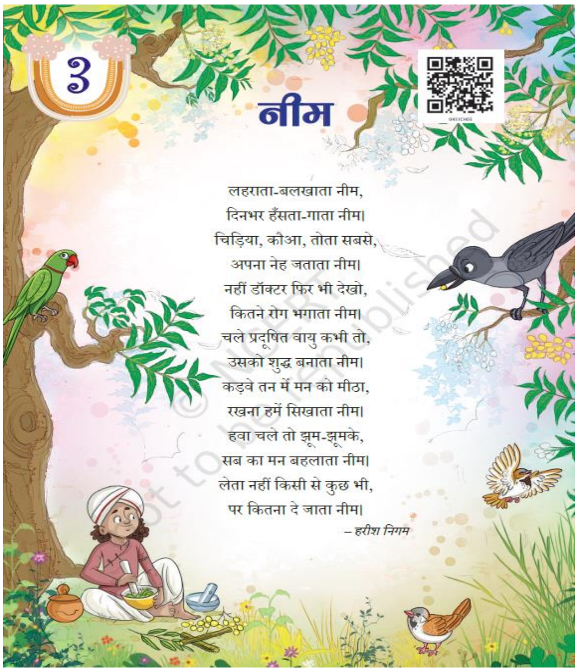
3

नीम

लहराता-बलखाता नीम,
दिनभर हँसता-गाता नीम।
चिड़िया, कौआ, तोता सबसे,
अपना नेह जताता नीम।
नहीं डॉक्टर फिर भी देखो,
कितने रोग भगाता नीम।
चले प्रदूषित वायु कभी तो,
उसको शुद्ध बनाता नीम।
कड़वे तन में मन को मीठा,
रखना हमें सिखाता नीम।
हवा चले तो झूम-झूमके,
सब का मन बहलाता नीम।
लेता नहीं किसी से कुछ भी,
पर कितना दे जाता नीम।

– हरीश निगम

7. **मूल्यांकन एवं सीखने की गतिविधियाँ**

- पाठों के अंत में दिए प्रश्नों की विविधता एवं गुणवत्ता (बहुविकल्पीय प्रश्न, तार्किक प्रश्न, परियोजना, उच्च स्तरीय विचार कौशल आदि)
- रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन के अवसर.
- क्या यह स्व-मूल्यांकन और आलोचना का अवसर देता है?

प्रस्तुत पुस्तक में इन बिंदुओं के उदाहरण से आकलन संबंधी पक्षों को समझा जा सकता है-

- समग्रतावादी दृष्टिकोण- 360 डिग्री आकलन उपस्थित है।
- रचनात्मक, योगात्मक एवं शिक्षार्थी के विविध आयामों हेतु सामग्री का है।
- रचनात्मकता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता एवं तार्किक चिंतन को बढ़ाने वाली गतिविधियाँ एवं अभ्यास शामिल हैं।
- अवलोकन, गतिविधि, परियोजना, खेल-खेल में सीखना, भाषा कौशलों की पारंगतता, कला समेकन, शब्द-भंडार में वृद्धि, व्याकरण संबंधी गतिविधियाँ शामिल हैं।
- दक्षता, मूल्य-संवर्धन, बहुभाषिकता आदि से संबंधित प्रश्न एवं अभ्यास कार्य, अभिव्यक्ति के लिए स्थान दिया गया है।

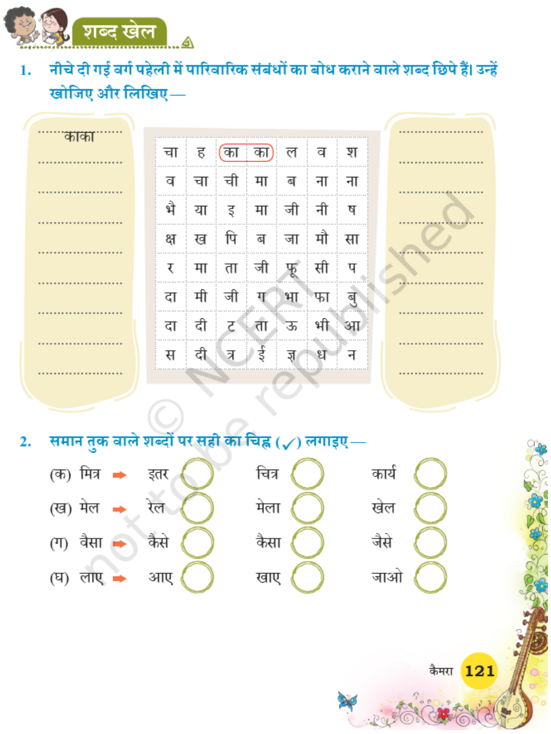
शब्द खेल

1. नीचे दी गई वर्ग पहेली में पारिवारिक संबंधों का बोध कराने वाले शब्द छिपे हैं। उन्हें खोजिए और लिखिए—

काका

चा	ह	का	का	ल	व	श
व	चा	ची	मा	ब	ना	ना
भै	या	इ	मा	जी	नी	ष
क्ष	ख	पि	ब	जा	मौ	सा
र	मा	ता	जी	फू	सी	प
दा	मी	जी	ग	भा	फा	बु
दा	दी	ट	ता	ऊ	भी	आ
स	दी	त्र	ई	ज्ञ	ध	न

2. समान तुक वाले शब्दों पर सही का चिह्न (✓) लगाइए—

(क) मित्र ➡ इतर ◯ चित्र ◯ कार्य ◯
(ख) मेल ➡ रेल ◯ मेला ◯ खेल ◯
(ग) वैसा ➡ कैसे ◯ कैसा ◯ जैसे ◯
(घ) लाए ➡ आए ◯ खाए ◯ जाओ ◯

कैमरा 121

8. **पाठ्यपुस्तक महत्वपूर्ण बिंदु**

- पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, एकांकी, पहेली, चुटकुले आदि से बच्चों का रुचिपूर्ण तरीके से परिचय करवाया गया है। अभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे बच्चों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।
- पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
- यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से बच्चों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।
- विभिन्न भाषायी कौशलों जैसे समझ के साथ बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफल तय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक, निर्धारित लक्ष्य, दक्षताएँ एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है।

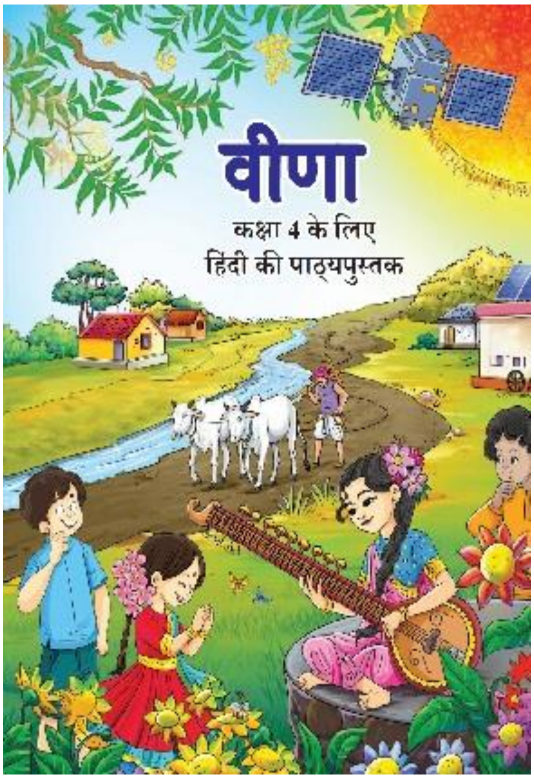

- पुस्तक में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यसामग्री का चयन एवं संयोजन किया गया है। सुंदर चित्रकारी एवं बड़े फॉण्ट को लिया गया है। यह विद्यार्थियों का जुड़ाव बढ़कर गहरा करने वाला है।
- प्रस्तुत पुस्तक, बच्चों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, साझा करने व कल्पना जैसे अभ्यासों को विस्तार कर गहरा करने के अवसर देने वाली है। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में प्राचीन परंपरा से 'आदित्य' तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।
- पुस्तक में मौखिक भाषा का विकास और लिखना, कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता, परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन बहुभाषिकता पर प्रमुखतः बल दिया गया है।
- संविधान एवं उसकी मूलभावना का ध्यान रखते हुए पुस्तक को विकसित किया गया है।
- पुस्तक में भारत के अलग-अलग समाजों का प्रतिनिधत्व शामिल है।

10. निष्कर्ष एवं अनुशंसा

- संपूर्ण पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन
- संशोधन/सुधार के लिए सुझाव
- कक्षा में पुस्तक की उपयुक्तता

सारांशतः कहा जा सकता है कि यह पाठ्यपुस्तक (वीणा कक्षा-4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 को पूर्णतः प्रतिबिंबित करती है। इस पाठ्यपुस्तक में पंचतंत्र, लोककथाएँ, उपनिषद की कथाओं से लेकर आदित्ययान तक की अधुनातन यात्रा दिखाई देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति तक का संपूर्ण भारत इस पाठ्यपुस्तक में भाषा और साहित्य के द्वारा दिखाई पड़ता है। इस पाठ्यपुस्तक में बच्चे भाषा के बहाने अपनी परंपरा, संस्कृति, प्रकृति, पर्यावरण और अपने परिवेश को भी समझ पाएँगे।